Page No.
Date: / /

शिक्षा तकनीकि का विकास →

शिक्षण में तकनीकि का उपयोग सर्वप्रथम (1962) में अमेरिका में सिडनी प्रेसे ने ओहियो राज्य विश्वविद्यालय में शिक्षण के मशीन के निर्माण द्वारा आरम्भ किया। यह मशीन एक शिक्षण युक्ति के रूप में जाँच हेतु तैयार की थी। इसके पश्चात (1930-40) के लगभग लुम्सडेन तथा ग्लेसर आदि तकनीकि वेत्ताओं ने शिक्षण को यन्त्रीकरण करने का प्रयत्न किया यह कार्य कुछ विशेष प्रकार की पुस्तकों कार्डों व बोर्डों के रूप में प्रस्तुत किया गया था। किन्तु शिक्षा तकनीकि के क्षेत्र में महत्व कार्य को प्रारम्भ किया गया (1954) के लगभग बी०एफ०स्किनर के द्वारा किये गये प्रयोगो के फल स्वरूप हुआ। उसने जानवरो पर किये गये प्रयोगो को शिक्षा के क्षेत्र में किया और इस प्रकार अभिक्रमित अधिगम का विकास हुआ जोकि शिक्षा-तकनीकि का महत्वपूर्ण अंग माना जाता है। इसी के अनुरूप ब्राउनमोर ने इग्लैंड में सर्वप्रथम प्रयोग किया। इसके पश्चात औद्योगिक क्रान्ति तथा अन्य क्षेत्रों में प्रगति के फल स्वरूप शिक्षा-शास्त्रियों ने इसकी विस्तार से व्याख्या की। अतः 1950 के बाद शैक्षिक तकनीकि का विशेष रूप से विकास हुआ और शिक्षा के क्षेत्र में विज्ञान पर आधारित इस प्रत्यय का का नवीन क्षेत्र विकसित होना आरम्भ हुआ

Page No.
Date: / /

अमेरिका तथा रूस की औद्योगिक क्रान्ति के कारण

अन्य देशो में भी शिक्षा तकनीकि के क्षेत्र में 1960 के पश्चात् विशेष प्रगति हुई है। इस समय में अनेक प्रकार की तकनीकियों का विकास हुआ जिनका प्रयोग सुरक्षा, उद्योग वाणिज्य, स्वास्थ्य तक शिक्षा के क्षेत्र में स्वतन्त्र रूप से किया जाने लगा। यहसब यह सब दृश्य साधनो श्रव्य साधनो रेडियो दूरदर्शन, प्रोजेक्ट, टेपरिकार्डर, कम्प्यूटर तथा प्रणाली विश्लेषण आदि तकनीकी आविष्कारों से सम्भव हुआ। इन सब का प्रभाव शिक्षा पर भी पड़ा और आदि तकनीकी और शिक्षा के क्षेत्र मे शैक्षिक तकनीकी व्यवहार तकनीकी तथा शिक्षा-तकनीकी आदि के क्षेत्र में शोधकार्यो के फलस्वरूप अनेक शिक्षण सिद्धान्तों, प्रतिमानों व प्रारूपो का प्रतिपादन अमेरिकी तथा अन्य विकसि देशों मे किया गया।

सन् 1966 से अमेरिका मे विश्व-विद्यालयों के शिक्षा मनोविज्ञान एवं विज्ञान विभागों द्वारा - शिक्षा - तकनीकि की एक राष्ट्रीय परिषद की स्थापना की गई तथा बन्द सरकिट टेली विज़न व अन्य दृश्य श्रव्य सामग्री का उपयोग किया गया। इस क्षेत्र में भाषा प्रयोगशाला की स्थापना की गयी है

Page No.
Date : / /

भारतवर्ष में तकनीकी — (1966)

भारत वर्ष में विज्ञान तथा तकनीकि का सर्वप्रथम उपयोग सेना व सुरक्षा कार्यों के लिए किया गया बाद में उसका क्षेत्र सुरक्षा, व्यापार, प्रबन्ध स्वास्थ्य हो गया 1966 में भारत में सर्वप्रथम एक भारतीय अभिक्रमित अनुदेशन संगठन की स्थापना की गयी जिसके माध्यम से शिक्षा तकनीकी का विकास के प्रयास विभिन्न शिक्षण संस्थाओं में किये गये। सन्- 1970 के लगभग तकनीकी के माध्यम से शिक्षा के क्षेत्र में विशेष रूप से प्रयत्न किये गये और राष्ट्रीय अनुसंधान तथा प्रशिक्षण परिषद् तथा उच्च शिक्षण संस्थान बड़ौदा, मेरठ व शिमला विश्वविद्यालय व शिक्षा विभागों में एम०एड० तथा पी०एच० डी० स्तर पर शोध कार्यों को बढ़ावा दिया गया। इसमें अभिक्रमित अनुदेशन तथा शिक्षण तकनीकि के क्षेत्र में विशेष प्रगति सम्भव हुई। व्यवहार परिवर्तन के क्षेत्र में भी कुछ शोध कार्य सम्पन्न किये गये। राष्ट्रीय अनुसंधान व प्रशिक्षण परिषद् के अन्तर्गत एक शिक्षा तकनीकी केन्द्र स्थापित किया गया इस केन्द्र का कार्य शिक्षण तकनीकि के ज्ञान का प्रचार करती तथा कार्यों द्वारा शिक्षण प्रक्रिया का विकास करता तथा प्रभावशाली बनाना है।

Page No.
Date: / /

शिक्षण →

एक शिक्षक का मुख्य कार्य शिक्षण अधिगम को नियोजित संगठित एवं नियन्त्रित करना है। कुछ निश्चित उद्देश्यों की प्राप्ति हेतु अध्यापकों द्वारा शिक्षण प्रदान किया जा सकता है। प्रयोजन यही होता है कि बालक अच्छी तरह अधिगम अनुभवों को ग्रहण कर अपने व्यवहार में अपेक्षित परिवर्तन ला सके और उनके व्यक्तित्व का सर्वांगीण एवं संतुलित विकास हो सके। अध्यापक अपना यह कर्तव्य तभी अच्छी तरह निभा सकते हैं जबकि उन्हें शिक्षण और अधिगम इन दोनों पक्षों और उनके आपसी सम्बन्धों के बारे में स्पष्ट रूप से ज्ञान हो। प्रस्तुत अध्याय में हम इस बारे में ही आवश्यक चर्चा करना चाहेंगे।

शिक्षण - सम्प्रत्यय

शिक्षण सम्प्रत्यय आम धारणा व छवि है जो शिक्षण का नाम लेते हैं। पटल पर आ जाता है।

A- शिक्षण का अर्थ एवं परिभाषा

B- प्रकृति व विशेषताएँ

Page No.
Date: / /

शिक्षण का अर्थ एवं परिभाषाएं →

साधारण अर्थ में

शिक्षक द्वारा अपनाये गये व्यवसाय अथवा किसी व्यक्ति विशेष को कुछ सिखाने या कुछ विशेष ज्ञान, कौशल, रुचियों अथवा किसी व्यक्ति की अभिवृत्ति आदि को अर्जित करने में दी जाने वाली सहायता से लिया जाता है।

परन्तु ध्यान से सोचा जाय तो शिक्षण को न तो इतने सरल शब्दों में परिभाषित किया जा सकता है और सांस्कृतिक और भौतिक प्रक्रिया है। जिसका स्वरूप व संगठन समाज के सामाजिक और सांस्कृतिक रूप के अनुसार बदला रहता है। शिक्षण का यह बदला स्वरूप शिक्षण शब्द की पारिभाषिक शब्दावली में लगातार परिवर्तन लाता रहा है। इसका अनुमान शिक्षण की कुछ निम्न परिभाषाओं से लगाया जा सकता है।